देव-नदी गंगा एवं पर्यावरण संरक्षण

परिचय

गंगा के बारे में सबसे पुरानी कथा भगीरथ के प्रयास की है। भगीरथ गंगा को स्वर्गलोक से धरती पर आने के लिए प्रसन्न करने में सफल हुए थे, उसके प्रचंड प्रवाह को अपनी जटा में रोक लेने के लिए, ताकि उसके वेग से धरती का नाश न हो जाये, उन्होंने शिवजी को भी प्रसन्न कर लिया था। गंगा लाखों हिन्दू तीर्थयात्रियों का वह पवित्र धाम है जिसके पावन जल में नहाने से जीवन पवित्र हो जाता है और उसमें अस्थि विसर्जन करने से परलोक सुधरेगा ऐसी मान्यता है।

गंगा हिमालय के दक्षिण ढलानों से और विंध्याचल के उत्तरी ढलानों के कुछ हिस्सों में बहती हुई बड़ी मात्रा में बर्फ और बारिश के पानी को साथ लेकर बंगाल की खाड़ी में गिरती है। गंगा का कछार का भारत की कुल भूमि के लगभग चौथाई भाग को समेटता है।

गंगा : कुछ तथ्य

कुल लम्बाई	:	2900 कि.मी हिमाचल के नंदादेवी, एवरेस्ट, कंचनजंगा आदि सर्वोच्च हिमनदों से निकलकर बंगाल की खाड़ी में गिरती है। यह 18 लाख घन फुट पानी का डिस्चार्ज प्रति सैकिण्ड करती है जो विश्व में सर्वाधिक है।
अपवाह क्षेत्र	:	432480 वर्गमील

भारतीय दर्शन में गंगा की महत्ता

पौराणिक काल से गंगा का जल सब पीड़ाओं को हरने वाला बताया गया है। ऋग्वेद (10/75/5) गंगा, यमुना, सरस्वती सतलुज, रावी, चिनाब, व्यास, झेलम व सिन्धु आदि नदियों का उल्लेख करता है। गंगा को वैदिक महाभारत में स्पष्ट लिखा है–

न गंगा-सदृशम् तीर्थम।

अबुल फजल ने लिखा है कि सम्राट अकबर पीने के लिए सदैव गंगाजल का प्रयोग करते थे।

गंगाजल के गुण

शीतलता, मिठास, पारदर्शिता, उच्च शक्तिवर्धकता, परिपूर्णता, पेयता, अनिष्ट को दूर करने की क्षमता, पाचक शक्ति तथा प्रज्ञा बनाए रखने की क्षमता।

गंगा-प्रदूषण नियन्त्रण

ऋषि मुनियों ने सदैव शुद्ध एवं पवित्र जल की उपलब्धता की कामना की है यथा–

'शुद्धा न आपस्तन्वे क्षरतन्तु ....।'

अर्थात्– हमारे शरीर के लिये शुद्ध जल सदैव प्रवाहित होता रहे।

परम्परा यह रही थी कि तालाबों व सरिताओं में स्नान करने से पूर्व कंकर फेंककर सोयी हुई पवित्र–पावन गंगा को जगाया जाता था। तत्पश्चात् ही वन्दना के उपरान्त, उसमें स्नान किया जाता था। परन्तु आज हमारी सोच की संवेदनशीलता को यान्त्रिकता ने झकझोर डाला है। हम आधुनिक व आज की तकनीकी संस्कृति में द्रुत गति से दौड़ रहे हैं। यह कैसी त्रासदी है ? जिस पवित्र गंगा के विषय में, हम आदिकाल से सोचते आ रहे हैं कि उसके दर्शन मात्र से ही मुक्ति का मार्ग खुल जाता है। परन्तु आज गंगा सहित अन्य नदियां दूषित हो चुकी हैं। आज के जीवनमूल्यों व शैली में अद्‌भुत परिवर्तन आ गया है कि माँ गंगा के समस्त घाटों पर नहाने–धोने, अस्थि और बिना या अधजले शवों का विसर्जन, शहरों का मैला व कल–कारखानों की गन्दगी ढोते–ढोते इस कदर प्रदूषित हो गई है कि उसका पानी पीने योग्य ही नहीं रह गया है, वह अनेक प्रकार के रोगों का केन्द्र बन चुकी है।

'गंगा के प्रदूषण में उद्योगों के रासायनिक अपशिष्ट पदार्थों का योगदान भी काफी है। डी. डी. टी. के कारखाने, चर्म शोधन कारखाने, लुगदी

व कागज उद्योग, पेट्रोकेमिकल और रासायनिक खाद, रबड़ और ऐसे कई कारखानों ने अपनी गंदगी फैंकने के लिए गंगा को ही उपयुक्त समझा है। उन सारे अपशिष्ट पदार्थों की मात्रा गंदे नालों से गिरने वाले पानी में आती है– कानपुर में 18 प्रतिशत इलाहबाद में 4 प्रतिशत और वाराणसी के निचले प्रवाह से औद्योगिक कचरा तेजी से बढ़ रहा है और उसका विष इस पवित्र नदी के बहुत से भागों में मछलियों को नष्ट कर रहा है।

गंगा प्रदूषण के नियंत्रण हेतु कठोर कदम उठाने की आवश्यकता है और साथ ही स्वयंसेवी संगठनों व नागरिक समितियों द्वारा जनता में जागृति व चेतना का विकास करना होग़ा तभी इस समस्या का निराकरण करते हुए 'पर्यावरण संरक्षण' किया जा सकेगा।

❑❑